सं. भ्रो.वि / ग्राई. डी. /रोहतक / 47-85/23505.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. मोहन स्पिनिंग मिल, रोहतक के श्रमिक दलेल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके ब्राइ लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, अौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिस्चना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवस्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिस्चना सं. 3864-ए-एस-ओ.(ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की द्वारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादअस्त ग्री उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादअस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है;

क्या श्री दलेल सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.श्रो.वि/रोहतक/49-85/23512.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. मोहन स्पीर्निंग मिल, रोइंकि के श्रमिक श्री महेन्द्र सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतृ निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यवाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-अम-70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.-एस.-ओ.(ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के प्रयोग गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, की विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :--

क्या श्री महेन्द्र सिंहं की सेवाग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं.श्रो.वि./सोनीपत/61-85/23519.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. एलास्टो केम प्रा. लि. एम = 2 इण्डस्ट्रीयल ऐरिया, सोनीपत के श्रीमक श्री सत्य नारायण तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, सब, स्रौद्योगिक विवाद स्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी स्रिधिसूचना सं. 9641-1-अम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी स्रिधिसूचना सं. 3864-ए.-एस.-स्रो.(ई)-श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त स्रिधिनियम की धारा 7 के स्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय होतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है :--

क्या श्री सत्य नारायण की सेवाग्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है? सं. श्री. वि./गृड्गांवा/107-84/23526.—चूंकि हरियाणा के राज्यवाल की राय है कि मै० सनराईज रवड़ इण्डस्ट्रीज, पाटौदी रोड, गुड़गांवा के अधिक श्री उमेग प्रगाद तथा उसके प्रवत्वकों के मध्य इसमें इसके बाद निवित मामले में कोई श्रीकोणिक विवाद है:

## भीर कृंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायतिर्णय हेतु तिर्विष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रज, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिशिनियम, 1947, की धारा 10 की उन्धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिशिस्चना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जुन, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिशिस्चना सं. 11495-जी-श्रम-88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिशिनियम की धारा 7 के ग्रिशीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धक तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री उमेग प्रसाद की सेवाधों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?